IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss S . Issu5, 2022

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके सामाजिक सामंजस्य एवं व्यवहार विचलन पर प्रभाव का अध्ययन

शोधार्थी
पी.एच.डी. शोधार्थी
स्कूल ऑफ एजुकेशन
श्रीमति रागिनी सरजारे
मैट्स विश्वविद्यालय,रायुपर,छ.ग.

(श्रीमति) संगीता शराफ
सह–प्राध्यापक
स्कूल ऑफ एजुकेशन
डॉ. शोध निर्देशिका
मैट्स विश्वविद्यालय,रायुपर,छ.ग.

सारांश

शिक्षक–शिक्षा के महाविद्यालयों की अवधारणा प्राचीन समय से भारत में नहीं थी। गुरू अपने शिष्यों से ही योग्य शिष्य को शिक्षक बनाने का कार्य करता था तथा वही शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों तथा महाविद्यालयों का उदय हुआ। इसके परिणामस्वरूप भारतीय छात्रों के लिये शिक्षकों के निर्माण का कार्य इन महाविद्यालयों में प्रारंभ हो गया। शिक्षण से पूर्व छात्राध्यापकों को शिक्षण अभ्यास द्वारा शिक्षण कला में पूर्व पारंगत बनाया जाता है। इसके बाद शिक्षक का समाज एवं राष्ट्र की सेवा करने के लिये भेजा जाता है। वर्तमान जीवन शैली बहुत ही रफ्तार के साथ आगे बढ़ रही है, इस गति के साथ अपनी आवश्यकता या याजनाओं को बदलने और विश्व के साथ चलने के लिए प्रयासरत है। इसको प्राप्त करने के लिए सैद्धांतिक आधार की आवश्यकता पड़ती है। वैज्ञानिक खोज परियोजनाओं और कठिन पढ़ाई के बिना आज दुनिया में प्रतिस्पर्धा कर पाना सम्भव नहीं है। अनुसंधान के द्वारा नितप्रति नये खोज के माध्यम के द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर के युवा छात्र एवं छात्राएँ नियम सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त कर वास्तविक जीवन में आत्मविश्वास ला रहे हैं ज्यादा से ज्यादा शिक्षा के नजरिये विभिन्न स्तरों पर कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहे। शिक्षा मानव के मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार को मानवीय व्यवहार में रूपांतरित करती है। मानव आवेगात्मक व्यवहार न करके विवेक युक्त व्यवहार करता है इस प्रकार शिक्षा मनुष्य को नवीन रूप प्रदान करती है। शिक्षा मनुष्य को नवीन आदतों एवं कौशलों को सिखाकर उसका रूपांतरण करती है। यह वह साधन है कि जिसके द्वारा बालक अपने जातीय अनुभवों को प्राप्त करके अपने व्यवहार को परिवर्तित करता है। शिक्षा की विषय वस्तु, प्रकृति तथा विधियाँ मनुष्य को अच्छा या बुरा बनाती है।

शब्द– महाविद्यालय, प्रशिक्षार्थी, नैतिक मूल्य, व्यवहार विचलन, सामाजिक सामंजस्य, शिक्षक–शिक्षा

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

प्रस्तावना –

शैक्षिक संरचना सम्पूर्ण देश में एकसमान होनी चाहिए, इन्होंने सार्वभौमिक शिक्षा को बड़ी गम्भीरता से लिया, काले मार्क्स के समय में लोग सार्वभौमिक शिक्षा की बात सोच भी नहीं सकते थे। उस काल में कल कारखानों में छोटे बच्चों को नौकरी पर रखा जाता था। सार्वभौमिक शिक्षा इस व्यवहार का विरोधी प्रत्यय है साम्यवाद में सार्वभौमिक शिक्षा पर बल दिया गया है। यह शिक्षा तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि कानून द्वारा बाल क्षम को पूर्णतः प्रतिबन्धित नकर दिया जाए और प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए कानून न बनाया जाए। यही नही राज्य सार्वभौमिक शिक्षा की आर्थिक सहायता प्रदान करें। कराधान द्वारा सहायता ही इसका स्त्रोत हो और यह बालकों के लिए निःशुल्क हो।

शिक्षा विकास की वह अनवरत् प्रक्रिया है जिसका ना कोई आदि है और न अंत। आज के युग में यह आवश्यक नहीं वरन् महत्वपूर्ण है कि हम शिक्षा को ऐसे रूप में देखे जिनमें न केवल शिक्षक अभिभावक और छात्र वरन् सम्पूर्ण समाज सतत् रूचि ले चूँकि एक ऐसी कूंजी है जो कई दरवाजे को खोलती है जिसकी श्रेष्ठता पर जीवन सफल एवं सार्थक बनाना है तो शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय की नजर अंदाज नहीं कर सकते हैं।

नैतिक मूल्य–

मूल्य एक प्रकार की मानव की अंतःनियंत्रित व्यवस्थित ऊर्जा है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णायक ढग से आता है तो वह उसका मूल्य कहलाता है। वस्तुतः मूल्य वे मानक या नैतिक व्यवहार की आचार संहिताएँ है जो संस्कृति से निकली परम्पराओं द्वारा घोषित तथा आत्म चेतना अथवा अन्तःकरण द्वारा संरक्षित होती है। मानव इनको आधार बनाकर अपनी जीवन शैली का निर्माण करता है और जीवन के आदर्श को प्राप्त करने का प्रयास करता हैं।

सामाजिक सामंजस्य –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में ही जन्म लेता है और मृत्यु भी समाज में ही होती है। समाज में व्यक्ति रहकर ही जितना अपने में खुद से संतुष्ठ तथा सामंजस्य करने की आवश्यकता होती है उतनी ही अपने सामाजिक वातावरण से रहन–सहन आदि बाते व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप स सामंजस्य बनायें रखना होता है सामाकि वातावरण के अनुसार उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्ट और पुराने अनुभव करना चाहिए और सामाजिक समायोजन कर सकता है।

जन्म के समय बालक में सभी प्रकार के सामाजिक गुणों का अभाव होता है वह माता–पिता एवं समाज के सम्पर्क में आकर मुस्कुराना व पहचानना सीखता है। आगे चलकर वह सामाजिक शिष्टाचार के अनेक गुणों को सीखता है। समाजशास्त्र में बच्चे के सामाजिक बनने की इस क्रिया को सामाजिकता कहा जाता है। और सामंजस्य एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने को समाज में स्थापित करता है और समाज द्वारा बनायें गयें वातावरण में अपने ढ़ालने के लिए या सम्मिलित होने के लिए तैयार रहता है यह जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है व्यक्ति पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्य बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

व्यवहार विचलन –

जाता हैं और समाजशास्त्रीय शब्दावली में इसे सामाजिक विचलन (विचलित व्यवहार) कहा जाता है। समाज में ऐसे व्यवहार को करने को व्यक्ति को दूर नहीं दी जा सकती क्योंकि ऐसा करने सामान्य सामाजिक संबंधों को क्षति पहुँती है। मूल्यों मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों, प्रतिमानों आदि के अनुकूल नहीं होता तो व्यक्ति के ऐसे व्यवहार की श्रेणी में रखा व्यक्ति का ऐसा व्यवहार समाज द्वारा पुस्कृत किया जाता है इसके विपरीत जब व्यक्ति का व्यवहार या ऐसे व्यवहार की सर्वत्र प्रशंसा होती है उसे समाज में सम्मान प्राप्त होता है, दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि स्वीकृत व्यवहार की श्रेणी में रखा जाता है इसे समाजशास्त्रीय शब्दावली में सामाजिक अनुरूपता कहा जाता है व्यक्ति के सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों, प्रतिमानों के अनुरूप होता है तो ऐसे सामाजिक व्यवहार को समाज द्वारा वास्तव में मनुष्य उपरोक्त दोनों प्रकार के व्यवहारों से संचालित होता है। जब व्यक्ति का व्यवहार या आचरण, आचरण सामाजिक

अध्ययन की आवश्यकता –

मनुष्य नैतिकता के अभाव में मनुष्यता का आंकलन संभव नहीं है नैतिकता व्यक्ति के विकास में एक सीढ़ी के समान है जिसके सहारे हम अपने जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं और नैतिक मूल्य के अभाव में मनुष्य मानव जीवन को अपने असामान्य बना देता है बिना मूल्य के व्यक्ति एक पशु के समान है। नैतिक मूल्य के अध्ययन के द्वारा व्यक्ति बुरी आदतों से अपने को नियंत्रित करता है और अपने को समाज में विभिन्न समुदाय, जाति, धर्म, रूढोवादी विचार से उपर उठकर सच्चाई ईमानदारी से समाज, देश के बारे में रचनात्मक विचार का उदय होता है।

अध्ययन का महत्व –

वर्तमान युग में हम सभी जानते हैं कि तकनीकी का हर क्षेत्र में प्रयोग होता जा रहा है मनुष्य अपनी आवश्यकता के लिए पूरी तरह तकनीक पर निर्भर हो गया है व्यक्ति का स्थान मशीनों ने ले लिया। व्यक्ति की क्षमता का महत्व कम हो गया है इसलिए मनुष्य पूरी तरह से रचनात्मक कार्यो में योग्य नहीं हो पा रहा है इसलिए पतन की ओर जाने की संभावना है। मनुष्य में नैतिक मूल्य के अध्ययन का बहुत महत्व है नैतिकता के कारण ही मनुष्य सही गलत बातों को समझता है अगर नैतिक मूल्य की जानकारी के अभाव में गलत मार्ग पर जा सकता है जिससे व्यक्ति गलत व्यवहार करके समाज में सामंजस्य बनाये रखने में परेशानी का सामना करना पड़ता है इसलिए नैतिक मूल्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

संबंधित शोध–अध्ययन

- **गेट एवं जी. 1990** "विभिन्न वर्गों के चुनाव में चार सामाजिक मूल्यों के आधार पर उनको अच्छी नागरिकता का

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

पूर्वानुमान।"

उक्त शोध अध्ययन में पश्चिम बंगाल शहरी इलाकों में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व तथा सामाजिक व्यवहार कौशल के आधार पर उनकी नागरिकता का मूल्यांकन किया जाता है। शोध में कुल 25 विद्यालयों के 555 विद्यार्थियों को जिसमें 200 लड़कियाँ तथा 355 लड़के 16 से 18 वर्ष के थे, शौदेश्य प्रतिचयन द्वारा चयनित किए गए।

काई स्ववायर टेस्ट उनके अशियतों का परीक्षण करने पर प्राप्त हुआ कि लड़कियों के मूल्यों में सहयोग व सामाजिक व्यवहार कौशल पर लड़कों से 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। शोध परिणाम यह भी बताते है कि युवावर्ग आयु बढ़ने के साथ ही राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति न तो जागरूक है, और ना ही महत्त्वपूर्ण समझाता है अतः शिक्षा में इन सम्प्रत्यशों के विकास हेतु उचित प्रयास अत्यावश्यक है।

- **हनसल एवं गौनकर (2008)** – ने (2003–2005) के हॉस्टल के विद्यार्थियों के सामाजिक संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन शीर्षक पर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि हॉस्टल के विद्यार्थी अपने सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन से संतुष्ट हैं एवं इनमें से समायोजन उच्च मात्राा में पाया गया। हॉस्टल एवं गैर हॉस्टलर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है लड़को का सामाजिक सवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन लड़कियो से अच्छा पाया गया।

सुसमैन के अनुसार – "व्यवहार विचलन उपरोक्त विशेषताओं को प्रदर्शित करने वाले व्यवहार जो कानून की अवज्ञा करने वाले व समाज–विरोधी होते है, बाल–विरोधी होते है, बाल अपराध की श्रेणी में रखे जा सकते है।"

सार – रूप में यही कहा जा सकता है कि राज्य द्वारा निधारित आयु–सीमा में आने वाला बालक जो अपने व्यवहार के द्वारा कानून का उल्लंघन करता और यह उल्लंघन उसकी आदत सी बन गई बाल–अपराधी माना जायेगा।

अध्ययन का उद्देश्य :–

- शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का आंकलन करना ।
- शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यवहार विचलन के बीच संबंध का आंकलन करना ।
- शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों, सामाजिक समायोजन तथा व्यवहार विचलन पर लिंग के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पना –

H_{01} पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

H_{02} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

H_{03} पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

H_{04} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी के द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है। जिसके अंतर्गत संबंधित चरो व घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है। जिससे प्राप्त परिणाम से वैज्ञानिक निष्कर्ष, नियम तथा सिद्धांतों की रचना, खोज व उसकी पुष्टि की जाती है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

H_{01} पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका 1 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1

पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा व्यवहार विचलन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance
नैतिक मूल्य	300	-0.359	p<.01

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss S . Issu5, 2022

व्यवहार विचलन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

तालिका 1 में पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के समूह में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = -0.359 प्राप्त हुआ जो कि पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा व्यवहार विचलन के बीच सार्थक किन्तु ऋणात्मक संबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर व्यवहार विचलन के मान में कमी आती है ।

अध्ययन में पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में व्यवहार विचलन का अर्थ महाविद्यालय में किये गये व्यवहार विचलन से है एवं सहसंबंध गुणांक के अनुसार पुरुष शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वद्धि होने से उनके व्यवहार विचलन में भी कमी आती है ।

तालिका 1 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक किन्तु ऋणात्मक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{01} [illegible] शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

H_{02} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा ।

पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया ।

परिणाम तालिका 2 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 2

महाविद्यालयों के महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा व्यवहार विचलन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	‘r’	Level of Significance
नैतिक मूल्य	300	-0.236	p<.01
व्यवहार विचलन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

तालिका 2 में महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के समूह में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = -0.236 प्राप्त हुआ जो कि महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा व्यवहार विचलन के बीच सार्थक किन्तु ऋणात्मक संबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर व्यवहार विचलन के मान में कमी आती है । अध्ययन में महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों मे व्यवहार विचलन का अर्थ महाविद्यालय में किये गये व्यवहार विचलन से है एवं सहसंबंध गुणांक के अनुसार महिला शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनके व्यवहार विचलन में भी कमी आती है ।

तालिका 2 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक किन्तु ऋणात्मक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ है, अतः इस दृष्टि से H_{02} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके व्यवहार विचलन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

H_{03} पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा । पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका 3 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 3

पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance
नैतिक मूल्य	300	0.551	p<.01
सामाजिक समायोजन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

तालिका 3 में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = 0.551 प्राप्त हुआ जो कि पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन के बीच सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर सामाजिक समायोजन के मान में भी वृद्धि होती है । अतः सहसंबंध गुणांक के अनुसार पुरुष शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनका सामाजिक समायोजन भी सुदृढ़ होता है । तालिका 3 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक एवं धनात्मक

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

सहसंबंध सामाजिक समायोजन के साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{03} पुरुष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

H_{04} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा । पियरसन सहसंबंध गुणांक की गणना के द्वारा इस परिकल्पना का सत्यापन किया गया । परिणाम तालिका में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 4

महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	N	'r'	Level of Significance
नैतिक मूल्य	300	0.140	p<.05
सामाजिक समायोजन	300		

r(df=298) at .05 level 0.113 and 0.148 at .01 level

तालिका 4 में गणना किये गये पियरसन सहसंबंध गुणांक का मान r = 0.140 प्राप्त हुआ जो कि महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थी के नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक समायोजन के बीच सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है जिसके अनुसार नैतिक मूल्य पर मान बढ़ने पर सामाजिक समायोजन के मान में भी वृद्धि होती है । अतः सहसंबंध गुणांक के अनुसार महिला शिक्षण प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि होने से उनका सामाजिक समायोजन भी सुदृढ़ होता है ।

तालिका 4 के परिणाम के अनुसार यह बात सिद्ध होती है कि महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध सामाजिक समायोजन के साथ है, अतः इस दृष्टि से परिकल्पना क्रमांक H_{04} महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य का सार्थक सहसंबंध उनके सामाजिक समायोजन के साथ नहीं पाया जायेगा, **अस्वीकार की जाती है ।**

निष्कर्ष –

दर्ग जिले के महाविद्यालयों के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य उनके सामाजिक समायोजन तथा व्यवहार विचलन को प्रभावित करते हैं, अतः शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास उनके सामाजिक समायोजन को बढ़ाने तथा कक्षा एवं महाविद्यालय के परिप्रेक्ष्य में व्यवहार विचलन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

6.21 सुझाव :

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

1. शिक्षण प्रशिक्षणार्थी के शिक्षण कार्य में सुधार एवं उनके व्यवहार में परिवर्तन हेतु प्रशिक्षण संस्थानों को समय–समय पर
2. वर्कशॉप,सेमिनार एवं फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन करना चाहिए।

की व्यवस्था होनी चाहिए।

3. प्रबंधकीय समिति को प्रशिक्षण संस्थान (महाविद्यालयों) में प्रशिक्षणार्थियों के लिए सुसज्जित शिक्षण कक्ष एवं प्रयोगिक कक्षा

प्रशिक्षण को विद्यालय के साथ मिलकर शिक्षक अनुभव कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

4. प्रशिक्षणार्थियों को नए–नए विधियो प्रविधियां एवं आधुनिक नवाचार के ज्ञान को प्राप्त करने हेतु महाविद्यालयों में अपनी पूर्ण

उपस्थिति देना चाहिए।

5. प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास एवं कर्तव्य निष्ठ होकर अपना प्रशिक्षण कार्य करना चाहिए एवं अपने शिक्षण कार्य को में

संदर्भ सूचि :–रुचि लेना चाहिए।

- क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों, एन.सी.ई.आर.टी. (1960) का माध्यमिक शिक्षक–शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम
- माध्यमिक शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम, गांधी विद्यापीठ:वेदछो, गुजरात (1968)
- होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम (एच.एस.टी.पी.)
- शिक्षक–प्रशिक्षण, एकलव्य, मध्य प्रदेश (1982)
- प्रारंभिक शिक्षक–शिक्षा : एक एकीकृत उपागम मीटांबिका, श्री अरविंद शिक्षण सोसायटी, नयी दिल्ली (1983)
- प्रारंभिक शिक्षक–शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम बी.एल.एड. एम.ए.सी. ई. एस.ई. शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय (1994)
- 'अन्वेषण अनुभव : सद्भागी शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम : बी.एड. (संबंधित), शिक्षा विभाग वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान (1997)
- विस्तृत शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम, गांधी शिक्षण भवन, शिक्षा महाविद्यालय मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई (2000)।